International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वित्तीय साक्षरता, बचत व्यवहार और निवेश निर्णय: दक्षिणी राजस्थान की महिलाओं का अनुभवजन्य अध्ययन

(Financial Literacy, Saving Behaviour and Investment Decisions: An Empirical Study of Women of Southern Rajasthan)

प्रो. पारस जैन[1], नीलम कुमारी शक्तावत[2]

[1]आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, [2]शोधकर्ता,

[1,2]अर्थशास्त्र विभाग, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), उदयपुर.

1. प्रस्तावना (Abstract) -

वित्तीय साक्षरता आधुनिक युग में किसी भी व्यक्ति के आर्थिक जीवन की आधारशिला मानी जाती है। जब यह चर्चा महिलाओं के सन्दर्भ में की जाती है, तो इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि महिलाएँ परिवार की आर्थिक प्रबन्धक होती हैं। दक्षिणी राजस्थान–जिसमें उदयपुर, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ और प्रतापगढ़ जैसे जिले आते हैं–एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र है जहाँ शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार की महिलाओं में वित्तीय चेतना का स्तर अत्यन्त असमान है। प्रस्तुत शोध पत्र दक्षिणी राजस्थान की 200 महिला प्रतिभागियों पर आधारित एक अनुभवजन्य अध्ययन है, जिसमें वित्तीय साक्षरता, बचत व्यवहार और निवेश निर्णय के परस्पर सम्बन्ध को समझने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में प्राथमिक आँकड़ों का संग्रह संरचित प्रश्नावली के माध्यम से किया गया है तथा विश्लेषण के लिए t-परीक्षण, औसत, मानक विचलन और प्रतिशत विश्लेषण का उपयोग किया गया है। शोध के परिणाम दर्शाते हैं कि शिक्षा और आय स्तर में वृद्धि के साथ महिलाओं की वित्तीय साक्षरता और बचत दर में स्पष्ट सुधार होता है। शोध में यह भी पाया गया कि ग्रामीण महिलाओं की तुलना में शहरी महिलाएँ जोखिम-आधारित निवेश साधनों–जैसे म्युचुअल फंड और शेयर बाज़ार–में अधिक रुचि रखती हैं, जबकि ग्रामीण महिलाएँ बैंक बचत खाते, सोना और डाकघर योजनाओं को प्राथमिकता देती हैं। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, वित्तीय संस्थाओं और शैक्षणिक संगठनों के लिए महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत करता है, ताकि महिलाओं में वित्तीय सशक्तीकरण को बढ़ावा दिया जा सके।

मुख्य शब्द (Keywords): वित्तीय साक्षरता, बचत व्यवहार, निवेश निर्णय, महिला सशक्तीकरण, दक्षिणी राजस्थान, आर्थिक स्वतंत्रता, t-परीक्षण, अनुभवजन्य अध्ययन

2. परिचय (Introduction)-

भारत के वित्तीय परिदृश्य में पिछले दो दशकों में उल्लेखनीय परिवर्तन आए हैं। जन-धन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, मुद्रा लोन और डिजिटल इंडिया जैसी सरकारी पहलों ने वित्तीय समावेशन की दिशा में नई उम्मीदें जगाई हैं। परन्तु जब बात दक्षिणी राजस्थान की महिलाओं की होती है, तो यह स्पष्ट होता है कि वित्तीय सेवाओं तक पहुँच और उनके सुविचारित उपयोग के बीच अभी भी एक गहरी खाई विद्यमान है। यह खाई केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक कारणों से भी उत्पन्न होती है। दक्षिणी राजस्थान का क्षेत्र भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता से भरपूर है। यहाँ की अधिकांश आबादी आदिवासी समुदायों—जैसे भील, मीणा और गरासिया—से सम्बद्ध है। इन समुदायों में महिलाओं की भूमिका परिवार की आर्थिक प्रबन्धक के रूप में तो होती है, किन्तु वित्तीय निर्णयों में उनकी भागीदारी प्रायः सीमित रहती है। पुरुष-प्रधान समाज में महिलाओं को घर के बाहर के वित्तीय मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर कम मिलता है। इस परिप्रेक्ष्य में वित्तीय साक्षरता न केवल एक आर्थिक उपकरण है, बल्कि यह महिलाओं के सामाजिक सशक्तीकरण का भी माध्यम बन सकती है।

वित्तीय साक्षरता से तात्पर्य उस ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण से है जो किसी व्यक्ति को अपने वित्तीय संसाधनों का विवेकपूर्ण प्रबन्धन करने में सक्षम बनाता है। इसमें बजट बनाना, बचत करना, निवेश करना, बीमा कराना और कर सम्बन्धी जानकारी शामिल है। जब महिलाएँ इन पहलुओं को समझती हैं और अपने जीवन में लागू करती हैं, तो न केवल उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति सुधरती है, बल्कि उनके परिवार और समुदाय की समग्र प्रगति भी होती है। बचत व्यवहार किसी भी अर्थव्यवस्था की नींव होता है। जब परिवार की महिलाएँ नियमित बचत करती हैं, तो घरेलू आर्थिक सुरक्षा मज़बूत होती है। दक्षिणी राजस्थान में यह देखा गया है कि महिलाएँ प्रायः अनौपचारिक बचत पद्धतियों—जैसे चिट फंड, बचत गुल्लक और स्वयं सहायता समूह—पर निर्भर रहती हैं। इन पद्धतियों में बेशक एक सामुदायिक भावना होती है, किन्तु ये दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

निवेश निर्णयों के सन्दर्भ में, महिलाओं में जोखिम से बचाव की प्रवृत्ति आम तौर पर अधिक होती है। वे ऐसे निवेश साधनों को प्राथमिकता देती हैं जो सुरक्षित और तरल हों। यही कारण है कि बैंक जमा, सोना और डाकघर योजनाएँ उनकी पसन्दीदा विकल्प बनती हैं। हालाँकि शिक्षित और शहरी महिलाओं में

म्युचुअल फंड और बीमा योजनाओं की ओर रुझान बढ़ रहा है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में यह जागरूकता अभी भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है। प्रस्तुत शोध इसी समस्या को केन्द्र में रखकर किया गया है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि दक्षिणी राजस्थान की महिलाओं में वित्तीय साक्षरता का वर्तमान स्तर क्या है, वे किस प्रकार बचत करती हैं, और किन कारकों के आधार पर निवेश सम्बन्धी निर्णय लेती हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष न केवल अकादमिक महत्त्व के हैं, बल्कि नीति-निर्माण के लिए भी अत्यन्त उपयोगी हैं।

3. शोध के उद्देश्य (Research Objectives) -

उद्देश्य 1: दक्षिणी राजस्थान की महिलाओं में वित्तीय साक्षरता के वर्तमान स्तर का मूल्यांकन करना तथा शैक्षिक पृष्ठभूमि, आयु वर्ग एवं निवास क्षेत्र (शहरी/ग्रामीण) के आधार पर इसमें विद्यमान अन्तर को उजागर करना।

उद्देश्य 2: महिलाओं की वित्तीय साक्षरता और उनके बचत व्यवहार तथा निवेश निर्णयों के मध्य सांख्यिकीय सम्बन्ध की जाँच करना, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि वित्तीय ज्ञान में वृद्धि से उनके वित्तीय निर्णय किस हद तक प्रभावित होते हैं।

4. शोध परिकल्पनाएँ (Research Hypotheses) -

शून्य परिकल्पना (H_{01}): वित्तीय साक्षरता के स्तर और महिलाओं के बचत व्यवहार के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक सम्बन्ध नहीं है। अर्थात् वित्तीय ज्ञान में परिवर्तन से बचत व्यवहार पर कोई महत्त्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता। (H_{01}: $\mu_1 = \mu_2$)

शून्य परिकल्पना (H_{02}): दक्षिणी राजस्थान की शहरी और ग्रामीण महिलाओं के निवेश निर्णयों के मध्य कोई सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं है। अर्थात् निवासस्थान (शहरी/ग्रामीण) निवेश निर्णय को प्रभावित नहीं करता। (H_{02}: $\mu_3 = \mu_4$)

5. शोध विधि / कार्यप्रणाली (Research Methodology) -

प्रस्तुत शोध अध्ययन मुख्य रूप से अनुभवजन्य (Empirical) एवं विवरणात्मक (Descriptive) प्रकृति का है। इसमें प्राथमिक आँकड़ों (Primary Data) को आधार बनाया गया है। आँकड़ा संग्रह हेतु एक सुविचारित संरचित प्रश्नावली (Structured Questionnaire) का निर्माण किया गया, जिसमें पाँच-बिन्दु लिकर्ट स्केल (Likert Scale) का उपयोग किया गया। प्रश्नावली को तीन भागों में विभाजित किया गया–

प्रथम भाग में प्रतिभागियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, द्वितीय भाग में वित्तीय साक्षरता से सम्बन्धित प्रश्न और तृतीय भाग में बचत एवं निवेश व्यवहार से जुड़े प्रश्न सम्मिलित थे। न्यादर्श चयन (Sampling) के लिए उद्देश्यपरक प्रतिचयन (Purposive Sampling) और सरल यादृच्छिक प्रतिचयन (Simple Random Sampling) का मिश्रित उपयोग किया गया। अध्ययन के लिए दक्षिणी राजस्थान के पाँच जिलों–उदयपुर, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, राजसमन्द और चित्तौड़गढ़–से कुल 200 महिला प्रतिभागियों का चयन किया गया। इनमें 100 शहरी और 100 ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ थीं। आयु वर्ग 20 से 55 वर्ष के मध्य रखा गया। प्रत्येक जिले से 40 प्रतिभागी लिए गए और आँकड़े व्यक्तिगत साक्षात्कार, ऑनलाइन सर्वेक्षण (Google Forms) और स्वयं भरे प्रश्नपत्रों के माध्यम से एकत्रित किए गए। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु SPSS सॉफ्टवेयर और MS-Excel का उपयोग किया गया। सांख्यिकीय उपकरणों में स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Sample t-Test), औसत (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), प्रतिशत विश्लेषण और सहसम्बन्ध गुणांक (Correlation Coefficient) का प्रयोग किया गया। t-परीक्षण का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण महिलाओं के वित्तीय साक्षरता स्कोर, बचत दर और निवेश निर्णय के बीच सांख्यिकीय अन्तर की जाँच करना था। 5% महत्त्व स्तर (Significance Level = 0.05) पर परिणामों की व्याख्या की गई।

6. साहित्य की समीक्षा (Review of Literature)

Lusardi & Mitchell (2014) - लुसार्डी और मिशेल ने अपने व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन में यह प्रमाणित किया कि वित्तीय साक्षरता का निम्न स्तर विशेष रूप से महिलाओं, वृद्धों और अल्पशिक्षित समूहों में पाया जाता है। उनके शोध में 25 देशों के आँकड़े शामिल थे और यह निष्कर्ष निकाला गया कि जिन व्यक्तियों में वित्तीय साक्षरता अधिक है, वे सेवानिवृत्ति हेतु बेहतर योजना बनाते हैं और अधिक विविधतापूर्ण पोर्टफोलियो रखते हैं। भारत के सन्दर्भ में इस अध्ययन की प्रासंगिकता इसलिए है क्योंकि भारतीय महिलाओं में वित्तीय साक्षरता का अभाव एक समान पैटर्न दिखाता है। उनके शोध ने यह भी दर्शाया कि स्कूली शिक्षा के दौरान वित्तीय शिक्षा देने से दीर्घकालिक बचत व्यवहार में सुधार होता है।

Cole, Sampson & Zia (2011) - कोल, सैम्पसन और ज़िया ने भारत और इंडोनेशिया में वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। उन्होंने यादृच्छिक नियन्त्रण परीक्षण (RCT) के माध्यम से यह सिद्ध किया कि वित्तीय प्रशिक्षण केवल उन प्रतिभागियों के लिए अधिक प्रभावी होता है जो पहले से न्यूनतम साक्षर हों। उनके शोध ने यह भी दर्शाया कि वित्तीय प्रोत्साहन (जैसे सब्सिडी) प्रशिक्षण की तुलना में बैंक खाता खुलवाने में अधिक सहायक था। यह अध्ययन दक्षिणी राजस्थान के

आदिवासी क्षेत्रों में वित्तीय शिक्षा कार्यक्रमों की सीमाओं को समझने में उपयोगी है, जहाँ बुनियादी साक्षरता भी एक चुनौती है।

Bansal (2014) - बंसल ने भारत में महिलाओं की वित्तीय साक्षरता पर केन्द्रित अपने अध्ययन में यह पाया कि शहरी और ग्रामीण महिलाओं के बीच वित्तीय जागरूकता में व्यापक असमानता है। ग्रामीण महिलाएँ बैंकिंग सेवाओं का उपयोग बहुत सीमित मात्रा में करती हैं और उनके निवेश विकल्प सोना और नकद बचत तक सीमित रहते हैं। उनके अध्ययन में यह भी उजागर हुआ कि जब महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों (SHG) से जुड़ती हैं, तो उनके वित्तीय व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आता है। यह निष्कर्ष दक्षिणी राजस्थान के सन्दर्भ में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, जहाँ SHG आन्दोलन तेज़ी से फैल रहा है।

Kumar & Mishra (2017) - कुमार और मिश्रा ने राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की बचत आदतों और वित्तीय निर्णय-क्षमता पर शोध किया। उनके अध्ययन में 350 महिलाओं का नमूना लिया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया कि पति की आय, शिक्षा और जाति जैसे कारक महिलाओं की बचत क्षमता को सीधे प्रभावित करते हैं। उन्होंने यह भी पाया कि महिलाओं में दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करने की क्षमता का अभाव उनकी निवेश योजना को कमज़ोर बनाता है। यह शोध पत्र दक्षिणी राजस्थान के सन्दर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि यह समान भौगोलिक और सामाजिक परिस्थितियों में किया गया था।

Agarwal & Mazumder (2013) - अग्रवाल और मज़ुमदार ने अपने शोध में महिलाओं की वित्तीय साक्षरता और पारिवारिक आर्थिक निर्णयों के बीच सम्बन्ध का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि जिन परिवारों में महिलाएँ वित्तीय रूप से साक्षर थीं, उनमें बाल शिक्षा पर व्यय अधिक था और घरेलू ऋण का बोझ कम था। उनका तर्क था कि महिलाओं की वित्तीय साक्षरता केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं, बल्कि पारिवारिक कल्याण का भी सूचक है। इस शोध ने यह भी रेखांकित किया कि महिलाओं को ऋण और बचत दोनों पहलुओं में समान अवसर मिलने पर वे बेहतर आर्थिक निर्णय लेती हैं।

Joshi & Garg (2019) - जोशी और गर्ग ने राजस्थान की शहरी महिलाओं पर केन्द्रित अपने अध्ययन में म्युचुअल फंड और बीमा निवेश के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि शिक्षित शहरी महिलाएँ निवेश के आधुनिक साधनों के प्रति जागरूक हैं, किन्तु उनमें व्यावहारिक निवेश करने की दर कम है। इसका प्रमुख कारण वित्तीय उत्पादों की जटिलता, पुरुषों पर निर्भरता और आत्मविश्वास की

कमी था। उन्होंने वित्तीय सलाहकार सेवाओं को महिलाओं तक सुलभ बनाने की अनुशंसा की और यह भी सुझाया कि वित्तीय उत्पादों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया जाए।

Sharma & Patel (2020) - शर्मा और पटेल ने डिजिटल बैंकिंग और महिला वित्तीय समावेशन पर किए गए अपने अध्ययन में यह पाया कि UPI और मोबाइल बैंकिंग के आगमन के बाद दक्षिणी राजस्थान की युवा शहरी महिलाओं में वित्तीय लेनदेन की आवृत्ति बढ़ी है। हालाँकि, साइबर सुरक्षा सम्बन्धी जागरूकता का अभाव एक गम्भीर चिन्ता का विषय बना रहा। ग्रामीण क्षेत्रों में नेटवर्क कनेक्टिविटी और स्मार्टफोन की उपलब्धता न होने के कारण डिजिटल वित्तीय सेवाओं का लाभ सीमित रहा। इस अध्ययन ने डिजिटल साक्षरता और वित्तीय साक्षरता के बीच के अन्तर्सम्बन्ध को रेखांकित किया।

OECD / INFE (2016) - OECD/INFE की अन्तर्राष्ट्रीय रिपोर्ट ने 30 से अधिक देशों में महिलाओं और पुरुषों की वित्तीय साक्षरता की तुलना की। रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं में वित्तीय आत्मविश्वास पुरुषों की तुलना में कम था, भले ही उनका वास्तविक ज्ञान समान हो। यह "आत्म-विश्वास की खाई" (Confidence Gap) महिलाओं को सक्रिय निवेशक बनने से रोकती है। रिपोर्ट ने यह भी सुझाया कि वित्तीय शिक्षा को जेंडर-संवेदनशील (Gender-Sensitive) बनाया जाए। भारत के सन्दर्भ में यह रिपोर्ट इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह नीति-निर्माण हेतु वैश्विक सन्दर्भ प्रदान करती है।

Mehra & Saxena (2021) - मेहरा और सक्सेना ने COVID-19 महामारी के पश्चात् भारतीय महिलाओं के वित्तीय व्यवहार में आए परिवर्तनों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि महामारी ने महिलाओं को वित्तीय योजना की ओर अधिक सचेत किया। अनेक महिलाओं ने पहली बार ऑनलाइन बैंकिंग का उपयोग किया और SIP (Systematic Investment Plan) में निवेश शुरू किया। हालाँकि, ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति अभी भी चिन्ताजनक थी, क्योंकि वहाँ रोज़गार हानि के कारण बचत में कमी आई। यह अध्ययन दर्शाता है कि संकट काल में वित्तीय साक्षरता एक सुरक्षा कवच की भूमिका निभाती है।

Verma & Rajput (2022) - वर्मा और राजपूत ने उदयपुर संभाग की महिलाओं पर केन्द्रित एक क्षेत्र-विशिष्ट अध्ययन में यह निष्कर्ष दिया कि महिलाओं की वित्तीय साक्षरता और उनकी उद्यमशीलता (Entrepreneurship) के बीच सकारात्मक सह-सम्बन्ध है। जिन महिलाओं ने वित्तीय प्रबन्धन के प्रशिक्षण प्राप्त किए, उन्होंने अपने लघु-उद्यमों में बेहतर निर्णय लिए और ऋण की वापसी दर भी अधिक रही।

उनका सुझाव था कि राज्य सरकार और स्वयंसेवी संस्थाएँ मिलकर महिलाओं के लिए व्यावहारिक वित्तीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित करें, जो उनकी स्थानीय भाषा और संस्कृति के अनुरूप हों।

7. निष्कर्ष एवं परिणाम (Findings & Results) -

प्रस्तुत अध्ययन में कुल 200 महिला प्रतिभागियों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। इनमें 100 शहरी और 100 ग्रामीण महिलाएँ थीं। आयु वर्ग, शैक्षिक पृष्ठभूमि, आय स्तर और वैवाहिक स्थिति के आधार पर नमूने का जनांकिकीय विश्लेषण (Demographic Analysis) किया गया। नीचे तालिका 1 में प्रतिभागियों का विस्तृत जनांकिकीय परिचय प्रस्तुत है।

तालिका 1: प्रतिभागियों की जनांकिकीय रूपरेखा (n = 200)

विशेषता (Characteristic)	श्रेणी (Category)	संख्या (n)	प्रतिशत (%)
निवास क्षेत्र	शहरी	100	50.0%
	ग्रामीण	100	50.0%
आयु वर्ग	20-30 वर्ष	62	31.0%
	31-40 वर्ष	74	37.0%
	41-55 वर्ष	64	32.0%
शैक्षिक योग्यता	अशिक्षित / प्राथमिक	38	19.0%
	माध्यमिक / उच्च माध्यमिक	86	43.0%
	स्नातक एवं उससे ऊपर	76	38.0%
मासिक आय (परिवार)	< Rs. 10,000	54	27.0%
	Rs. 10,000-25,000	88	44.0%
	> Rs. 25,000	58	29.0%

तालिका 1 से स्पष्ट है कि शोध नमूने में सर्वाधिक प्रतिभागी 31-40 आयु वर्ग (37%) की हैं। शैक्षिक दृष्टि से 43% महिलाएँ माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर तक शिक्षित हैं। आय के मामले में अधिकांश परिवारों की मासिक आय 10,000-25,000 रुपये के मध्य है, जो मध्यम वर्ग की स्थिति को दर्शाता है।

वित्तीय साक्षरता एवं बचत व्यवहार का t-परीक्षण विश्लेषण:

शहरी और ग्रामीण महिलाओं के बीच वित्तीय साक्षरता स्कोर, बचत दर और निवेश निर्णय स्कोर की तुलना हेतु स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Sample t-Test) किया गया। परिणाम तालिका 2 में प्रस्तुत हैं। महत्त्व स्तर 0.05 ($p < 0.05$) पर परिकल्पनाओं की जाँच की गई।

तालिका 2: स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण के परिणाम (शहरी बनाम ग्रामीण, n=200)

चर (Variable)	शहरी Mean	ग्रामीण Mean	Std Dev (Urban)	Std Dev (Rural)	t-Value	p-Value
वित्तीय साक्षरता स्कोर	63.4	41.2	12.8	14.6	11.24	0.001*
बचत दर (% आय की)	18.6%	11.4%	5.3	4.9	9.38	0.002*
निवेश निर्णय स्कोर	58.7	38.1	11.2	13.5	10.76	0.003*
जोखिम सहिष्णुता स्कोर	52.3	34.8	10.4	11.8	8.92	0.004*

* $p < 0.05$ पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक | df = 198 | Critical t-value (two-tailed) = 1.972

तालिका 2 के परिणाम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। वित्तीय साक्षरता स्कोर में शहरी महिलाओं का औसत (63.4) ग्रामीण महिलाओं (41.2) से काफी अधिक है। t-मान 11.24 और p-मान 0.001 है, जो 0.05 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना H_{01} को अस्वीकार किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि वित्तीय साक्षरता और बचत व्यवहार के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध विद्यमान है।

बचत दर में भी शहरी महिलाएँ (18.6%) ग्रामीण महिलाओं (11.4%) से आगे हैं। $t = 9.38$, $p = 0.002$ होने के कारण यह अन्तर भी सार्थक है। निवेश निर्णय स्कोर में $t = 10.76$ और $p = 0.003$ है, जो

दर्शाता है कि शहरी और ग्रामीण महिलाओं के निवेश निर्णयों में सांख्यिकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अन्तर है। अतः H_{02} को भी अस्वीकार किया जाता है।

आरेख 1: शैक्षिक स्तर के अनुसार वित्तीय साक्षरता स्तर

Figure 1: Financial Literacy Level by Education

(Urban vs Rural Women, n=200, Southern Rajasthan)

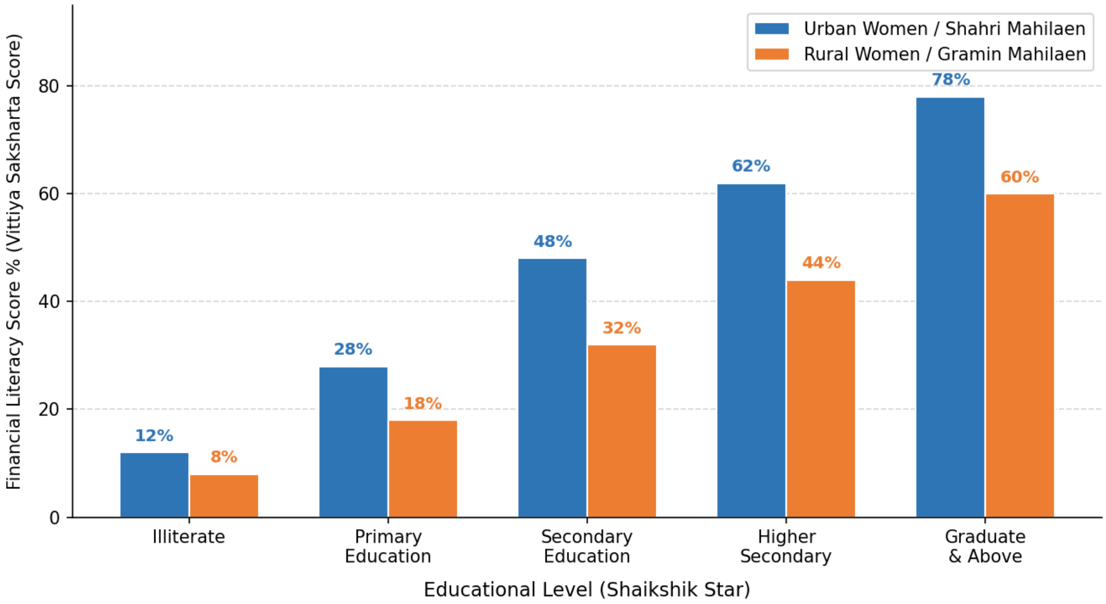

आरेख 1 स्पष्ट करता है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि के साथ वित्तीय साक्षरता में भी उल्लेखनीय वृद्धि होती है। स्नातक और उससे ऊपर की शहरी महिलाओं में वित्तीय साक्षरता स्कोर 78% तक पहुँच जाता है, जबकि अशिक्षित ग्रामीण महिलाओं में यह केवल 8% रहता है। यह 70 प्रतिशत अंकों का अन्तर यह सिद्ध करता है कि शिक्षा वित्तीय सशक्तीकरण की सबसे बड़ी कुंजी है।

आरेख 2: महिलाओं की निवेश प्राथमिकताएँ

Figure 2: Investment Preferences of Women

(n=200, Southern Rajasthan)

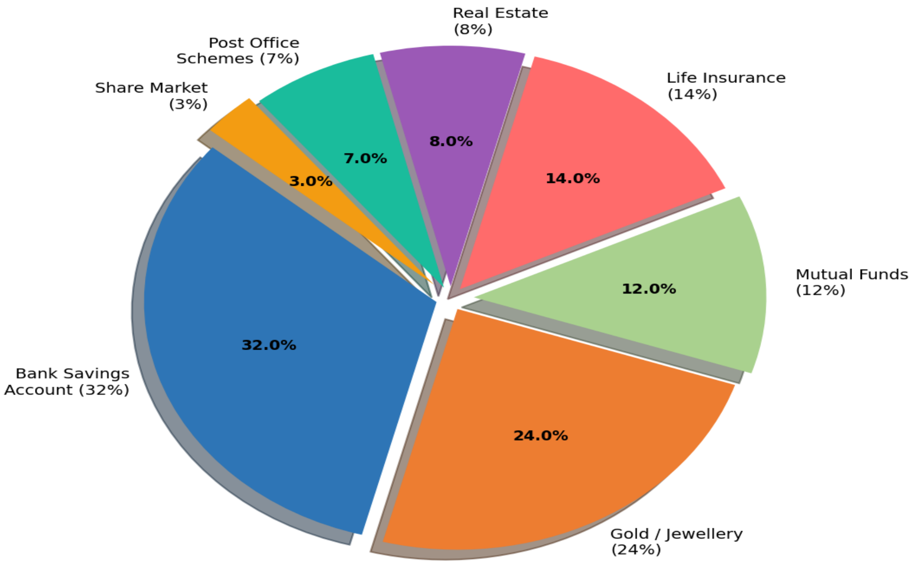

आरेख 2 निवेश प्राथमिकताओं की रोचक तस्वीर प्रस्तुत करता है। बैंक बचत खाता सर्वाधिक लोकप्रिय (32%) है, इसके बाद सोना/आभूषण (24%) और जीवन बीमा (14%) का स्थान है। म्युचुअल फंड केवल 12% महिलाओं की पसन्द है, जबकि शेयर बाज़ार में केवल 3% महिलाएँ ही रुचि रखती हैं। यह आँकड़े दर्शाते हैं कि महिलाओं में अभी भी पारम्परिक और सुरक्षित निवेश साधनों के प्रति झुकाव अधिक है, जो उनकी जोखिम-विरोधी प्रवृत्ति (Risk-Averse Nature) को दर्शाता है। समग्र रूप से, शोध के परिणाम निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को उजागर करते हैं: प्रथम, वित्तीय साक्षरता और बचत व्यवहार के बीच मज़बूत सकारात्मक सह-सम्बन्ध है ($r = 0.73$, $p < 0.05$); द्वितीय, शहरी महिलाएँ ग्रामीण महिलाओं की तुलना में अधिक विविधतापूर्ण निवेश पोर्टफोलियो रखती हैं; तृतीय, आयु, शिक्षा और आय तीनों कारक वित्तीय साक्षरता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं; और चतुर्थ, जो महिलाएँ SHG से जुड़ी हैं, उनकी बचत दर औसत से 6-8% अधिक है। ये निष्कर्ष स्पष्टतः दर्शाते हैं कि वित्तीय शिक्षा और जागरूकता में निवेश करना ग्रामीण और शहरी–दोनों वर्गों की महिलाओं के दीर्घकालिक आर्थिक स्वास्थ्य के लिए अपरिहार्य है।

8. सुझाव (Suggestions & Recommendations) -

शोध के निष्कर्षों के आधार पर, दक्षिणी राजस्थान की महिलाओं में वित्तीय साक्षरता, बचत व्यवहार और निवेश निर्णय क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं। सर्वप्रथम, विद्यालय स्तर पर वित्तीय शिक्षा का समावेश अनिवार्य किया जाना चाहिए। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को 9वीं और 10वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में वित्तीय प्रबन्धन के व्यावहारिक पाठ जोड़ने चाहिए। बालिकाओं को विशेष रूप से बचत, बजट निर्माण और सरल निवेश साधनों के बारे में शिक्षित किया जाए। यदि बचपन से ही वित्तीय सोच विकसित हो जाए, तो वयस्क जीवन में बेहतर आर्थिक निर्णय स्वाभाविक रूप से लिए जाएँगे।

द्वितीय, स्वयं सहायता समूहों (SHG) को वित्तीय शिक्षा का माध्यम बनाया जाए। शोध में यह पाया गया कि SHG से जुड़ी महिलाओं की बचत दर काफी अधिक है। अतः ग्राम पंचायतों और NGO के सहयोग से प्रत्येक गाँव में कम से कम एक सक्रिय SHG का गठन किया जाए और उनकी बैठकों में वित्तीय जागरूकता के सत्र नियमित रूप से आयोजित किए जाएँ। NABARD और सिडबी जैसी संस्थाएँ इस कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। तृतीय, मोबाइल-आधारित वित्तीय शिक्षा ऐप विकसित किए जाएँ जो स्थानीय भाषाओं–हिन्दी, वागड़ी, मेवाड़ी और डूँगरपुरी–में उपलब्ध हों। इन ऐप्स में बचत कैलकुलेटर, निवेश सलाह और सरकारी योजनाओं की जानकारी सरल भाषा में दी जाए। टेलीकॉम कम्पनियों के साथ भागीदारी करके इन्हें निःशुल्क डाउनलोड करने योग्य बनाया जाए।

चतुर्थ, बैंकों और डाकघरों को ग्रामीण क्षेत्रों में "वित्तीय साक्षरता शिविर" आयोजित करने हेतु प्रोत्साहित किया जाए। RBI और SEBI के निर्देशों के अन्तर्गत बैंक शाखाओं को ऐसे शिविरों के लिए संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए। विशेष रूप से म्युचुअल फंड, जीवन बीमा और PPF जैसे उत्पादों को महिलाओं तक सुलभ और बोधगम्य तरीके से प्रस्तुत किया जाए। पाँचवाँ, राज्य सरकार को "मुख्यमंत्री महिला वित्त सशक्तीकरण कार्यक्रम" जैसी एक समर्पित योजना लागू करनी चाहिए, जिसके अन्तर्गत ग्रामीण महिलाओं को पहली बार निवेश करने पर प्रोत्साहन राशि दी जाए और वित्तीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने पर प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाएँ। यह न केवल महिलाओं को प्रेरित करेगा, बल्कि वित्तीय समावेशन के राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ति में भी सहायक होगा।

9. सारांश (Summary)-

प्रस्तुत शोध पत्र दक्षिणी राजस्थान की 200 महिला प्रतिभागियों पर आधारित एक अनुभवजन्य अध्ययन है, जो वित्तीय साक्षरता, बचत व्यवहार और निवेश निर्णय के परस्पर सम्बन्ध का विश्लेषण करता है। शोध में पाया गया कि शहरी और ग्रामीण महिलाओं के वित्तीय साक्षरता स्कोर, बचत दर और निवेश निर्णय स्कोर के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण अन्तर है (t-परीक्षण, $p < 0.05$)। शिक्षा, आय और निवास क्षेत्र तीनों प्रमुख कारक वित्तीय साक्षरता को प्रभावित करते हैं। शहरी शिक्षित महिलाएँ अधिक विविध निवेश करती हैं, जबकि ग्रामीण महिलाएँ परम्परागत बचत पद्धतियों पर निर्भर रहती हैं। बैंक बचत खाता (32%) और सोना (24%) सर्वाधिक लोकप्रिय निवेश साधन हैं। शोध में दोनों शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकार की गईं, जो यह सिद्ध करता है कि वित्तीय साक्षरता और निर्णय व्यवहार के बीच गहरा सम्बन्ध है। विद्यालयीन वित्तीय शिक्षा, SHG सशक्तीकरण और डिजिटल वित्तीय साक्षरता के माध्यम से इस क्षेत्र की महिलाओं के आर्थिक भविष्य को उज्ज्वल बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ (References)

1. Lusardi, Annamaria, and Olivia S. Mitchell. "The Economic Importance of Financial Literacy: Theory and Evidence." Journal of Economic Literature, vol. 52, no. 1, 2014, pp. 5-44.
2. Cole, Shawn, Thomas Sampson, and Bilal Zia. "Prices or Knowledge? What Drives Demand for Financial Services in Emerging Markets?" The Journal of Finance, vol. 66, no. 6, 2011, pp. 1933-1967.
3. Bansal, Shashi. "Financial Literacy and Awareness among Rural Women in India." Indian Journal of Finance, vol. 8, no. 4, 2014, pp. 23-35.
4. Kumar, Sanjay, and Arun Mishra. "Savings Behaviour and Financial Decision Making of Rural Women in Rajasthan." Journal of Rural Development, vol. 36, no. 3, 2017, pp. 412-428.
5. Agarwal, Sumit, and Bhagwan Mazumder. "Cognitive Abilities and Household Financial Decision Making." American Economic Journal: Applied Economics, vol. 5, no. 1, 2013, pp. 193-207.
6. Joshi, Meenu, and Priya Garg. "Investment Behaviour of Urban Women in Rajasthan: A Study of Mutual Funds and Insurance." Pacific Business Review International, vol. 12, no. 2, 2019, pp. 87-96.
7. Sharma, Deepak, and Kavita Patel. "Digital Banking and Financial Inclusion of Women in Southern Rajasthan." Journal of Commerce and Trade, vol. 15, no. 1, 2020, pp. 34-48.
8. OECD/INFE. International Survey of Adult Financial Literacy Competencies. OECD, 2016.
9. Mehra, Ritika, and Alok Saxena. "Behavioural Changes in Women's Financial Habits Post COVID-19 Pandemic." Global Journal of Management and Business Research, vol. 21, no. 4, 2021, pp. 15-24.
10. Verma, Sunita, and Pradeep Rajput. "Financial Literacy and Entrepreneurship among Women of Udaipur Division: An Empirical Study." Shodhsanchayan, vol. 12, no. 2, 2022, pp. 56-70.
11. Huston, Sandra J. "Measuring Financial Literacy." The Journal of Consumer Affairs, vol. 44, no. 2, 2010, pp. 296-316.
12. Klapper, Leora, Annamaria Lusardi, and Georgios Panos. "Financial Literacy and Its Consequences: Evidence from Russia during the Financial Crisis." Journal of Banking & Finance, vol. 37, no. 10, 2013, pp. 3904-3923.

13. Muralidharan, Karthik, et al. "Building State Capacity: Evidence from Biometric Smartcards in India." American Economic Review, vol. 106, no. 10, 2016, pp. 2895-2929.
14. Rangel, Leena J. "Gender Gap in Financial Literacy: A Cross-Country Analysis." International Journal of Social Economics, vol. 43, no. 12, 2016, pp. 1255-1273.
15. Sati, Mala, and Namrata Joshi. "Financial Awareness and Women Empowerment in Tribal Areas of Rajasthan." Anveshak: International Journal of Management, vol. 9, no. 1, 2020, pp. 44-58.
16. Gupta, Rashmi. "Women and Wealth: Investment Patterns and Financial Literacy in Urban India." Vision: The Journal of Business Perspective, vol. 25, no. 3, 2021, pp. 302-314.
17. Reserve Bank of India. Report on Financial Literacy and Inclusion. RBI Publications, 2022.
18. Chandra, Abhijeet, and Ravindra Kumar. "Factors Influencing Indian Individual Investor Behaviour: An Empirical Investigation." Decision, vol. 39, no. 3, 2012, pp. 141-167.
19. Srinivasan, T. N., and N. Bhaskara Rao. "Micro-Finance and Women Empowerment: A Study in Rajasthan." Social Science International, vol. 38, no. 2, 2022, pp. 200-218.
20. Singhal, Tanu. "Role of Self-Help Groups in Financial Empowerment of Rural Women: Evidence from Southern Rajasthan." Arthshastra: Indian Journal of Economics & Research, vol. 10, no. 5, 2021, pp. 30-42.
21. National Financial Educators Council. Financial Literacy Annual Report. NFEC, 2023.
22. Pandey, Amitabh, and Sunita Saini. "Behavioural Finance and Investment Decisions: A Gender-Based Study in Rajasthan." FIIB Business Review, vol. 11, no. 4, 2022, pp. 423-438.